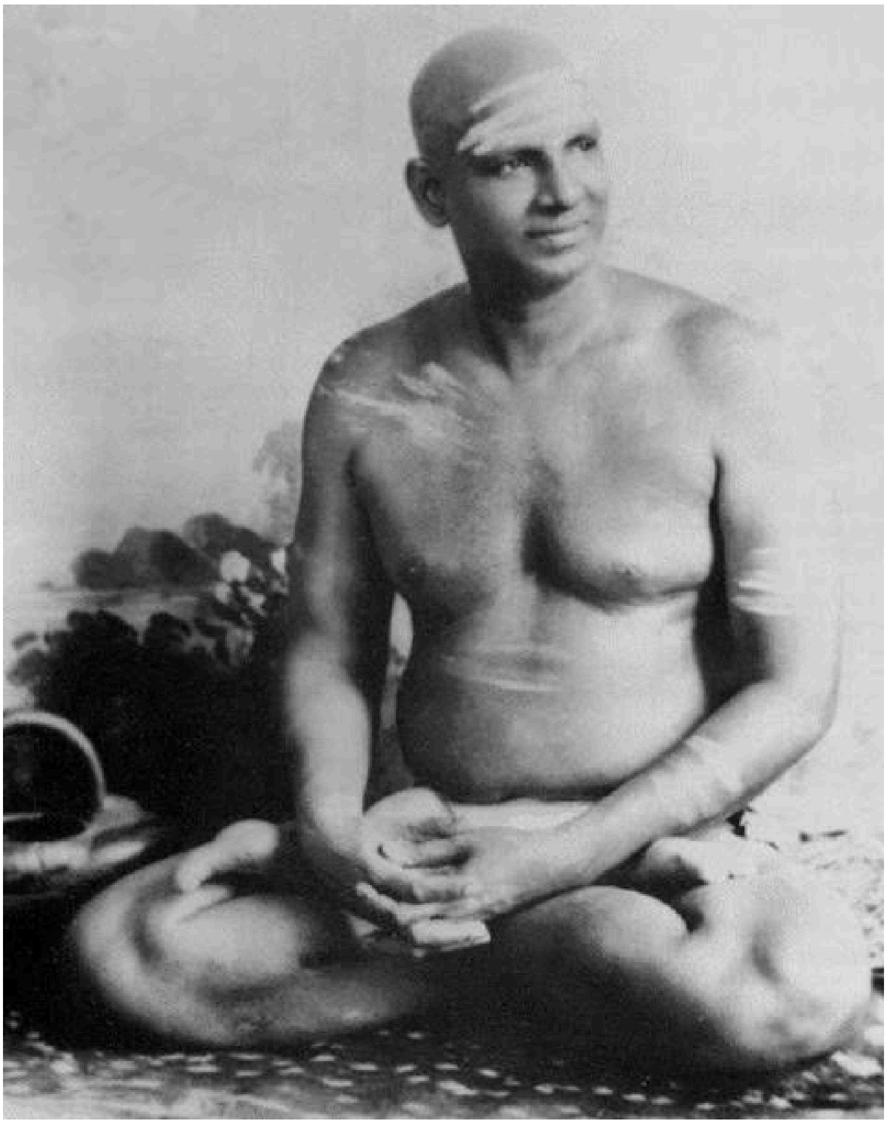
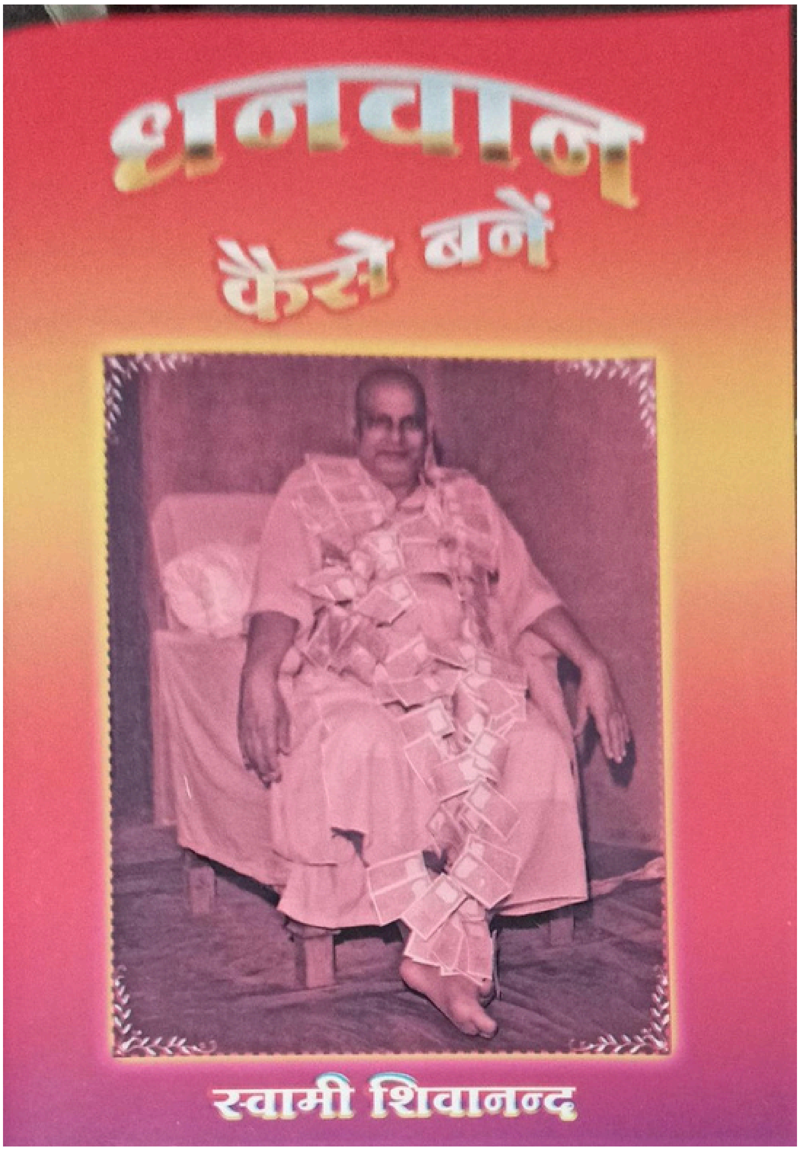




धनवान्   कैसे बनें

HOW TO BECOME RICH
काहिन्दी अनुवाद

लेखक

श्री स्वामी हिवानन्द सरस्वती

अनुवाहदका

हिवानन्द राहधका जिौक

प्रकिाक

द हिवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय : हिवानन्दनगर-२४९१९२

हिला : हटिरीगढ़वाल,उत्तराखण्ड(हिमालय), भारत

www.sivanandaonlineorg, www.dlshq.org

प्रथम हिन्दीसंस्करण : २००६

हितीय हिन्दीसंस्करण : २०१४

(१,००० प्रहतयाँ)

HS 13

PRICE: 50/-

'द हिवाइन लाइफसोसायटी , हिवानन्दनगर' के हलए
स्वामी पद्मनाभानन्दिाराप्रकाहिततथा उन्हीं ंके िारा
'योग-वेदान्त फारेस्टएकिोमीपे्रेस,पो. हिवानन्दनगर,
हि. हटिरी गढ़वाल,उत्तराखण्ड,हपन२४९१९२' में मुहित।
For online ordersandCataloguevisit: disbooks.org

ॐ

समृद्धि, िाद्धन्त और आनन्द की खिो करने वाले समस्त िनों ंको समहपित !

ॐ

प्रकिाक का वक्तव्य

स्वामी हिवानन्द िी मिारि िो मानव मात्र के प्रहत प्रेम और मानव-कल्याण के कायोंके हलए समस्त हवश्व में िाने िाते िैं उन्होंने 'धनवान् कैसे बनें' पुस्तक को समस्त िनों ंके कल्याणाथि प्रस्तुत हकया िै और इसके हलए वे सदा स्वामी िी के ऋणी रिेंगे।

यि पुस्तक न तो पूणितया भौहतक या सासाररक हवचारों ंसे सम्बद्धित िै, िैसा हक इसका िीर्िक इहगत करता िै और न िी यि मात्र आध्याद्धिक सम्पदा से अहभप्रेरेत िै हिसके गिन ज्ञान की स्वामी हिवानन्द िी लोगों ंसे सामान्यतया अपेक्षा रखते थे।

इसमें स्वामी िी ने व्यापार की आचार-नीहत के मुख्य गूढ़ रिस्यों ंकाआश्चयिनकढंगसे बिों ंमें वणिन हकया िै और भौहतक सम्पदा के आकाक्षी िनों ंके चररत्रकेअन्तरस्थपुनिीवन तथा उनमें भौहतक सम्पहत्त के स्थान पर सद्गुणों ंके ििन िारा स्थायीआध्याद्धिकसम्पदाकी प्राद्धि की ओर तथा स्थायी आनन्द-प्राद्धि की उत्कट इच्छा िाग्रत करनेकेहलएउनकेमनको रूपान्तररत करने के हलए उपदेि भी हदये िैं।

पुस्तक के चारों ंअध्यायों ंमें हदये गये हनदेिों ंका सिी वास्तहवक अथि स्वामी हिवानन्द िी ने प्रस्तावना में भली-भाँहत स्पष्ट हकया िै िो परस्पर हवरोधी लगने वाली प्रत्येक बात का समाधान करता िै।

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

अनुवाहदका का हवनम्र हनवेदन

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी हिवानन्द िी मिारि किते थे हक 'तुम मेरी व्यद्धिगत सेवा करना चािते िो, तो मेरी पुस्तकों ंका अनुवाद करो ।' इससे मुझे प्रेरणा हमली हक हिन्दी भार्ी पाठकों ंके हलए मुझे पूज्य श्री गुरुदेव की पुस्तकों ंका अनुवाद करना चाहिए और परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी हिवानन्द िी मिारि की प्रेरणा और आिीवािद से उनकी पुस्तक 'How to Become Rich' का हिन्दी अनुवाद 'धनवान् कैसे बनें' प्रस्तुत िै। इसके िारा प्रेरणा प्राि कर युवा पीढ़ी अपने अमूल्य मानवि–ीवन को सफल बनाये और अपने परम लक्ष्य को प्राि करे। इसी

अपेक्षा के साथ परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी हिवानन्द िी मिारि के पावन चरणों ंमें सादर समहपित ।

-डिवानन्द राडिका अिौक

लेखक की प्रस्तावना

धमि, अथि, काम और मोक्ष, चारों ंपुरुर्ाथों के मध्य प्रथम तीन इस िगत् से सम्बि रखते िैं। अथि और काम का हनयन्त्रण करने वाला और हनधािरण करने वाला प्रहतहनहध धमि िै। उपरोक्त दोनों ंपरस्पर आहश्रत िैं, कोई भी एक अन्य के हबना पूणि निीं ंिै। न तो काम लालसा िै और न िी अथि उसे पूणि करने वाला प्रहतहनहध । गीता में भगवान् कृष्ण किते िैं हक मैं वि अहभलार्ा हाँ िो धमि के हवरुि निीं ंिै। अथाित् हकसी के िीवन िेतु हनस्सने्दि अथि और काम समूपूणि कारक निीं ंिैं। हकसी की आध्याद्धिक सम्पहत्त की अविेलना करने में अथि और काम सफल निीं ंिो सकते। क्ोंहक सभी एकमात्र मोक्ष या मुद्धक्त की इच्छा ले कर िन्म निीं ंलेते और न िी अहधकांि मानव-समूि तत्काल संन्यास िेतु उपयुक्त िोता िै; इसहलए उनके हलए उच्च ज्ञान प्राद्धि िेतु अथि और काम बने िैं।

पुस्तक का िीर्िक 'धनवान् कैसे बनें' मात्र भौहतक समृद्धि से सम्बि निीं ंरखता । यहद ऐसा िोता, तो यि वास्तव में हववेकी मनुष्य की अहभलार्ाओं ंके अनुरूप निीं ंिोता और न िी यि हकसी के आध्याद्धिक अनुग्रिों ंका सांसाररक की भााँहत हवरोध करता िै। यहद ऐसा िोता, तो यि िािार व्यद्धक्तयों ंमें से मात्र एक व्यद्धक्त पर अपना प्रभाव िालता। हकन्तु यि िीर्िक दोनों ंकी ओर संकेत करता िै। यि दोनों ंका समन्वय करता िै। दोनों ंके सद्धिहलत रूप के अथि में निीं,ं

बद्धि इस अहभप्राय से हक प्रथम तो मनुष्य को ज्ञान प्रिा करना चाहिए, हफर धनवान् बनने का प्रयत्न करना चाहिए। अहधकांि पाठकों ंके हलए 'धनवान् कैसे बनें' का क्ा तात्पयि िै? यि पुस्तक िो अपूवि आध्याद्धिक धीर िैं, उनके हलए अत्यन्त हवचारोते्तिेक आध्याद्धिक कोर्गृ िै और बाद का आधा काम उनके हलए िै, हिनकी अहभलाऱ्ाओं ंमें धन अत्यहधक मित्त्वपूणि िै। इसहलए यि मात्र एक के हलए िी सने्दि निीं ंिै।

काम के पिले भाग में मैंने कुछ गुणों ंके हवकास पर बल हदया िै, िो व्यद्धक्त को उसकी िअिन-क्षमता की वृद्धि करने और उसे आि-हनभिर बनने िेतु सामर्थ्ि प्रदान करते िैं। व्यद्धक्त के चररत्र के कुछ गुण िो उसे हमत्रों ंपर हविय िेतु तथा उसकी हनरीक्षण-क्षमता बढ़ाने िेतु आवश्यक िैं, हफर व्यापार आरम्भ करने िेतु कुछ सुझाव, इसके बाद व्यापाररक िीवन में कृहर् और उद्योग का कायि तथा धन के सदुपयोग िेतु मागों की भी व्याख्या की गयी िै।

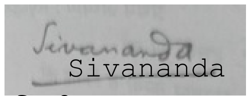
गोद हलया पुत्र बनना या बहुत अहधक धन कमाना हकसी को इस हमर्थ्ा हवचार िेतु पे्ररेरत निीं ंकरता हक धन उसकी मूलभूत इच्छाओं ंकी पूहति िेतु अथवा एक वैभविाली िीवन िेतु साधन मात्र िै। इच्छाएँ वास्तव में कभी भी पूणि निीं ंिोतीं।ं यि अिगर की अहध (िरगन-फायर) की भाँहत िै, िो अपने हिकार को तीं से भस्म कर देती िै। इसे िान्त करने वाला िो इसे अपने प्रयासों ंसे अहधकाहधक उते्तेहित करता िै, उस पीहड़त व्यद्धक्त के िरीर के नष्ट िो िाने के बाद भी यि उससे हचपकी रिती िै। वास्तव में वैभविाली िीवन व्यद्धक्त को स्थायी आनन्द की प्राद्धि िेतु हकसी भी प्रकार से िद्धक्त-प्रिाक निीं ंिै, तो हफर कोई धन अिअिन क्ों ंकरे और क्ों ंवि दत्तक पुत्र बने ? िाँ, इसका एक हनहश्चत प्रयोिन िै। धन मानव-कल्याण के यिस्वी कायों िेतु साधन िै, हिसके िारा िािारों ंकी सिायता िोती िै और उनें् िीवन में प्रगहत के अवसर प्रिा िोते िैं। यि दीन-दुद्धखयों ंकी उन्नहत तथा रोगों ंसे पीहड़त िनों ंको सान्त्वना देने का साधन िै। इसका प्रयोिन समाि-सेवी संस्थानों ंकी स्थापना और उनें् आहथिक सिायता देने के हलए िै, ििाँ अनाहश्रतों ंको आश्रय, अनाथों ंका पालन और भूखों ंके पेट भरे िाते िैं तथा गरीबों ंको हिक्षा, पीहड़तों ंको और्हध और आकांहक्षयों ंको आध्याद्धिक ज्ञान हमलता िै।

इसी प्रकार एक धनवान् कन्या से हववाि करने का अथि यि निीं ंिै हक उसका चुनाव धन के कारण आि िो गया िै। इसे एक समृद्धििाली िीवन के हनमाणि के हलए िो मानव मात्र की सेवा िेतु समहपित िै, इस दृहष्टकोण से हलया िाना चाहिए। मैंने अहववाहित युवाओं ंको एक शंगार-पे्रमी बाला को िीवन-साथी बनाने िेतु सावधान हकया िै; क्ोंहक ऐसे हववाि के पररणाम सदैव हतरस्कार के योग्य और इसका अन्त सदा िी घरेलू अप्रसन्नता और वैवाहिक िीवन नष्ट िोने में िोता िै-हविेर्कर तब, िब हक पुरुर् आहथिक दृहष्ट से सम्पन्न निीं ंिोता। मैंने यिाँ यि भी अवश्य बताया िै हक हववाि प्रते्येक के िीवन में आवश्यक निीं ंिै। अच्छा िोगा, एक सच्चा अहभलार्ी हववाहित िीवन के बिन से स्वयं को बहुत दूर रखे । उसके हलए हववाि अहभिाप बन िायेगा । िब हक इसके स्थान पर एक कामुक पुरुर्, हिसके हलए सांसाररक वासनाओं ंपर हविय पाना अत्यन्त कहठन िै, उसके हलए हववाि एक चिारदीवारी की तरि और उसकी नैहतक असावधाहनयों ं में गुफा की भाँहत सुरक्षा करता िै। इस कारण हववाि की व्यवस्था की गयी िै और यि उन अहधकांि मानवों ंपर लागू की िाती िै िो पूणि आि-संयमी िीवन िेतु तत्काल उद्यत निीं ंिैं। हववाि को एक संस्कार के रूप में सिान हदया िाता िै, न हक स्व-सनु्तुहष्ट िेतु अहधकार-पत्र की तरि ।

इसके बाद मैंने एक सफल भहवष्य िेतु मागों और साधनों ंके बारे में बहुत अहधक हलखा ै िो हक प्रत्येक व्यद्धक्त के आन्तररक हनमाण िारा एक न समा िोने वाला मूल्य प्रदान करता िै–से िि चररत्र रखना, अपने अन्त:करण के प्रहत सच्चा िोना, नैराश्य में आिावादी िोना और दृढ़ संकल्प रखना। इसमें मैंने पाठकों ंको द्यूतक्रीिा, मद्यपान और ऋण लेने के अभ्यास के भयंकर पररणाम िेतु सावधान हकया िै और उनकी सूमहत, संकल्प िद्धक्त और हचत्त की एकाग्रता, ब्रह्मचयि का पालन, वैराग्य की वृद्धि तथा कल्पना हकयाहवहध और सदद्धयविार की कला के अभ्यास िेतु बल हदया िै। उपरोक्त सभी क्रमबि हसिान्त सफलतम समृद्धििाली भहवष्य िेतु िद्धक्त का संचार िी निीं ंकरते, बद्धि वे हकसी के हवकाय और उच्च लक्ष्यों ंकी प्राद्धि के हलए भौहतक सम्पहत्त से अहधक अहभलाषा करने के योग्य िैं। उपरोक्त हसिान्तों ंका अभ्यास व्यद्धक्त को पूणि आि-संयमी िीवन और पूणि संन्यास के हलए या िीवन के उच्चतम लक्ष्य आि-साक्षात्कार िेतु तैयार करना िै. साथ–ी-साथ हनम्न वासनाओं ंसे उसकी रक्षा भी करता िै।

पुस्तक के अन्त में आकांक्षी पाठक पूणिता (हसद्धि) को अपनी पहुँच में पाता िै। उसे धन के दोषों ंका ज्ञान िो गया िै। उसे सांसाररक सुखों ंकी नश्वरता और कामना रहित अवस्था के परमानन्द का स्मरण कराया िै। सबसे धनवान् कौन िै? इसकी आकांक्षा उसके भीतर ज्योहतत िोती िै। वि धीरे-धीरे उत्सािपूविक धन रहित और पत्नी रहित द्धस्थहत िेतु िाग्रत िोता िै। अन्त में वि उस कृपा के चुनाव िेतु तैयार िो िाता िै िो हक कठोपहनषद् के हिज्ञासु नहचकेता ने भगवान् यम से प्रिा की थी। अब वि सत्य या कल्याण की अहवनािी प्रकृहत और भौहतक सुखों ंकी चंचल या मायावी प्रकृहत तथा यि सुख उनके हलए दु:ख िै िो वैराग्य से युक्त निीं ंिैं और स्वयं को माया की भस्म करने वाली ज्वालाओं ंमें िाल रिे िैं। वि अब समझ चुका ै हक कल्याण एक चीि िै और सुख अन्य। इन दोनों ंका लक्ष्य हभन्न-हभन्न िै- "वि िो सोचता ै और कल्याण की खोि करता िै, सफलता को प्रा करता िै और िो सुख की खोि करता ै, वि अपने लक्ष्य से भटक िाता िै।" (कठोपहनषद) इच्छा रहित बनो, तुम सारे संसार में सबसे धनवान् बन िाओगे।

तुम सब सच्चे हववेक से युक्त िो ! ईश्वर तुम सबको िाद्धन्त, समृद्धि और सफलता, परमानन्द और कैवल्य का आिीवाद प्रदान करे !



निवरी १, १९५०

ॐ

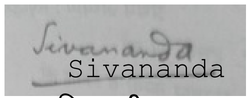
भाग्यवान् आकांहक्षयो !

मैं आप सबके उज्ज्वल और प्रसन्नतापूणि नव-वरि् की कामना करता हाँ।

इस ◌िीवन-संग्राम में वीरतापूविक यिु करें। स्वयं को हववेक की ढाल और हववेक के ◌िस्त्र से सुसद्धित करें। ◌िूरता से आगे बढ़ें। प्रलोभनों ◌ंके अधीन न ◌िों।◌ं

अन्तरिाा पर हनत्य ध्यान करें। आप परमानन्द और अनन्त सुख के प्रदिे में प्रवेि करेंगे। आप हनश्चल ◌िद्धक्त, हवश्वास और ◌िाद्धन्तमय ◌िीवन का हनमािण करेंगे।

ईश्वर आपको ◌िीिवाद प्रदान करे !



१ ◌िनवरी १९५०

डवषयानुक्रडिका

प्रकािक का वक्तव्य 3

अनुवाहदका का हवनम्र हनवेदन 3

लेखक की प्रस्तावना 4

प्रथम अध्याय समृद्धिािाली कैसे बनें

दत्तक पुत्र बनें 10

धनवान् कन्या से हववाि करें 10

शृंगार-प्रेमी पत्नी से ◌िरें 11

सािसी बनें 11

स्व-पररश्रम से उन्नत व्यद्धक्त बनें 12

व्यवसाय कैसे प्रारम्भ करें ? 12

हमत्रों ◌ंपर कैसे हविय पायें ? 13

हनरीक्षण-क्षमता का हवकास करें 13
सदैव व्यस्त रिें 13
अपनी ग्रिण-क्षमता बढ़ायें 14
सौदे में हववाद करना त्याग दें 14
उद्योगी बनें 14
या, कृहर्-कमि करें 15
मृतुयु-पत्र द्वारा अहधक धन न छोड़ें 15
अपने धन का सदुपयोग करें 16

हितीय अध्याय सफलता के मागि

सफलता के रिस् 17
स्वास्थ्य िी सम्पहत्त िै 17
ल्दी सोयें, िल्दी िागें 18
कभी ऋण न लें 18
द्यूतक्रीड़ा न करें 18
मद्यपान त्याग दें 19
हमत्र, हनरिा न िों! 19
हनत्य ध्यान करें 20
लक्ष्मी मन्त्र का िप करें 20
भुद्धक्त और मुद्धक्त 21

तृतीय अध्याय आन्त्तररक तैयारी

शुद्ध चररत्र रखें 21
सद्गुणों का हवकास करें 22
सत्यवादी बनें 22
ब्रह्मचयि का पालन करें 23
वैराग्य का हवकास करें 23
सूमृहत का हवकास करें 23
संकल्प का हवकास करें 24
दृढ़ हनश्चय रखें 24
कल्पना, आचरण, सद्धविार 25

चतुथि अध्याय पूणिता प्राप्त करें

सबसे धनवान् कौन िै? 25
धन के दोर् 26
रुपये का कोई मूल्य निीं िै 26
धन आता िै और िाता िै 27

इच्छा रहित बनें 27
परमानन्द की पत्नी रहित द्धस्थहत........ 27
पि की सम्पहत्त 28
मिान् सम्पहत्त-मोक्ष 28

पररहिष्ट

धन के उत्पािन पर 29
धन के व्यय पर 30
स्वहणिम कोर्........ 32
लक्ष्मीस्तोत्रम् 35
पि के हलए मन्त्र 36
कीतिन 37
ईश्वर के प्रहत कृतज्ञता प्रकट करना 38

ॐ श्री मिालक्ष्म्यै नमुः

प्रथम अध्याय
समृद्धिाली कैसे बनें
दत्तक पुत्र बनें

एक धनवान् व्यद्धक्त का दत्तक पुत्र बनें,
उनका सारा धन आपका िोगा,
अपने हपता के प्रहत कतिव्य परायण बनें,
उनके सभी कायों में लगन से सिायता करें,
उनके प्रहत सत्यवादी, ईमानदार और हवश्वसनीय बनें,
बुरी संगत त्याग दें,
समस्त बुरी आदतें छोि़ दें,
अपने हपता का सिान करें और
उनके आदेिों ं का पालन करें,
अपने पररश्रम से उनकी सम्पहत्त में वृद्धि करें,
अपने स्व-अहििित धन का दस प्रहतित दान करें,
व्यवसाय को अच्छी तरि समझें,
चतुर बनें, दृढ़ बनें, अध्यवसायी बनें,
पररश्रमी बनें, सावधान बनें, ईमानदार बनें।

धनवान् कन्या से हववाि करें

धनवान् कन्या से हववाि करें, आप भी धनवान् िो िा येंगे,
उसकी सम्पहत्त आपकी सम्पहत्त िोगी,
क्ोंहंक वि आपकी िीवन-संहगनी िै;
उसके साथ अच्छा व्यविार करें और उसे प्रसन्न करें,
सभी हवर्यों ं में,
उसके प्रहत समहपित रिें,
उसे अंगीकार करें, सामंिस्य् रखें, हमलनसाररता रखें। अपने श्वसुर
को भी प्रसन्न रखें,
उनका सिान करें, मृदु भार्ण करें, हवनम्र बनें,
इस सम्पहत्त का अपव्यय, वृथा व्यय न करें, हमतव्ययी बनें और
सुरहक्षत हनवेि तथा बुद्धिमत्तापूणि
व्यवसाय के िारा सम्पहत्त में वृद्धि करें,
अपनी पत्नी से कलि न करें,

उसके साथ गृिलक्ष्मी की तरि व्यविार करें।

शृंृंगार-प्ेरेमी पत्नी से िोरें

ऐसी पत्नी मिान् कष्टदायक िोती िै,
वि अपने पहत से सदा कलि करती िै,
वि धन का अपव्यय करती िै,
वि अपने पालकों, भाई और बिन को धन भेिती िै।
वि कभी सन्तुष्ट निीं िोती,
बि साहियों और गले के िारों में धन का अपव्यय करती िै।
वि भोिन निीं पका सकती,
वि कई नौकर चािती िै,
वि उनके साथ कलि करती िै,
नौकर भाग िाते िैं,
अब नये नौकर कैसे हमलेंगे,
पहत व्याकुल और हचहन्तत िै,
बि वि ध्यान करने बैठता िै,
वि सोचती िै-वि शीघ्र संन्यास ले लेगा,
वि उससे इस हवषय पर कलि करती िै,
वि घर 'राम हवलास' या 'शाहन्त हवला'
वास्तव में भयंकर नरक िै।
यहद तुम उससे एक कप चाय की माँग करोगे
वि तुम्हें तंग करेगी,
क्योंहक तुमने उसकी िीरों के िार की इच्छा को पूणि निीं हकया,
वि किेगी-
"तुम स्नातक िो, मैं भी स्नातक हाँ,
मुझे पिले एक कप चाय ला कर दो।"
अपनी पत्नी के चुनाव में सावधान रिो,
विााँ मानहसक एकता आवश्यक िै,
वि धाहमिक और भहक्तमती िोनी चाहिए।
अपने देश की कन्याओं में से अपनी पत्नी का चुनाव करो,
हिनमें आधुहनक सभ्यता और रेहियो िै
उन्हें प्रवेश निीं करने देना चाहिए।

सािसी बनें

नैरोबी, नेटाल, अमेररका, पेररसया हकसी ब्रसल िाओ,
व्यापाररक प्रहतष्ठान या फमिसे िुड़ो,

कहठन पररश्रम करो, सचे्चे और ईमानदार बनो,
कायि के सभी पक्षों ंको हवसूतृत रूप में सीखो,
या विााँ पर अपना हचहकत्सा का व्यवसाय प्रारम्भ करो,
या एक ठेकेदार अथवा पत्रकार बन िाओ,
या कोई सांसृ्कहतक संस्था प्रारम्भ करो,
या आढ़हतया बन िाओ।

स्व-पररश्रम से उन्नत व्यद्धक्त बनें

अपने पररश्रम से उन्नत मनुष्य बनो, अपनी िीहवका स्वयं उपाहिित करो, अपने हपता की सम्पहत्त में से एक पाई भी न छुओ, अपना पौरुर्, बल और सामर्थ्ि प्रकट करो, अपने हपता की अहिित सम्पहत्त पर रिना अपमाननिक िै। तुम्हारे अन्दर िद्धक्त का भण्डार िै,
तुम इस संसार में वसु्तुओं ंको बना या
उनें् नष्ट कर सकते िो। तुम आश्चयि कर सकते िो,
न्यायाधिी मुतुतुस्वामी ने स्लिक के लैंप के
प्रकाि में अध्ययन हकया, वे बहुत गरीब थे,
उन्ोंनें बहुत उच्च स्थान प्राि हकया,
कहठन पररश्रम से अपनी समस्त
आन्तररक िद्धक्तयों ंको प्रकट करो,
और िद्धक्तिाली व्यद्धक्तत्व की भााँहत चमको ।

व्यवसाय कैसे प्रारम्भ करें ?

बि आप कोई व्यापार प्रारम्भ करो,
वररष्ठ अनुभवी व्यापाररयों ं से सलाि लो,
उनके साथ हिष्य की तरि रिो,
व्यापार की गूढ़ बातों ं को अच्छी तरि सीखो,
मात्र तभी आप आगे बढ़ सकें गे।
यहद आप कोई व्यवसाय सीधे प्रारम्भ कर देंगे,
हबना हकसी अनुभव के ,
आप असफल िो िायेंगे।
बुक कीहपंग, एकाउन्ट्स और टायहपंग सीखें,
थोड़ी पूाँिी से व्यवसाय प्रारम्भ करें।

हमत्रों ़ंपर कैसे हविय पायें ?

वाणी में मधुरता लायें,
अच्छी तरि व्यविार करें, स़ुिील बनें, हवनम्र बनें,
साफ-सुथरा लेन-देन रखें,
िो आपके पास िै, उसमें दूसरों ़ंको भी हिस्सा दें,
अनावश्यक हववाद न करें, हविय प्रा करने के हलए हकसीके हवरुि न किें,
अपने वचन पर हटके रिें,
अन्य िब बीमार िों,़ उनकी सेवा करें,
ध्यान और प्राथिना के िारा
चुम्बकीय व्यद्धक्तत्व का हवकास करें,
अन्य िो किें, उसे धैयिपूविक सुनें,
िब आप कोई पुस्तक उधार लें,
उस पर कवर चढ़ायें और उसे साफ रखें,
और उसे उपयुक्त समय पर वापस करें;
हकसी से कभी न किें हक वि गलत िै,
उदार बनें, धमिाा बनें, दयालु बनें।

हनरीक्षण-क्षमता का हवकास करें

सदैव चौकन्ेने और फुतीले रिें,
प्रकृहत के समस्त रूपों ़ंको देखें,
लोगों ़ंको भली प्रकार िानें,
उनके स्वभाव, कायि-प्रणाली और आदतों ़ंका अध्ययन करें,
बुद्धि को तीक्ष्ण और हनणियािक रखें,
बुद्धि की प्रखरता का हवकास करें और
हनणिय का ज्ञान रखें,
हचत्त को एकाग्र करके अन्तर का प्रकाि प्रा करें,
अपने कानों ़ंऔर आँखों ़ंको सदा चैतन्य रखें,
सिी सोच, हचन्तन, ध्यान,
तुलना, हवचार, हनणिय और अनुमान करें।

सदैव व्यस्त रिें

पररश्रमी मनुष्यकीतरिसदाव्यस्तरिें,
अपने मद्धस्तष्ककोसदाकाममेंलगायेरखें,
आलस् ि़िीकौसेनष्टकरदें,
आलसी मद्धस्तष्कैतानकीकायिालिौ,

आसन, प्राणायाम, व्यायाम, घूमने, बैठक में हनयहमत रिें।
तामहसक भोिन िैसे प्यि, लिसुन, मांस आहद त्याग दें।
हनत्य कायिक्रम पर अहिग रिें,
एक स्मरण दैनद्धन्दनी रखें,
प्राथिना करें, सन्ध्या, िप, स्वाध्याय और ध्यान करें,
प्रातुःकाल िि द और नीबू का रस लें,
कभी-कभी हत्रफला चूणि लें।

अपनी ििि न-क्षमता बढ़ायें

यहदआप व्याख्याता िैं,
हवद्याहथियों ंऔर लोगों ंके हलए उपयोगी पुस्तकें हलखें;
यहद आप व्यापारी िैं,
ठेके सावधानी से लें;
अपने भागीदारों ंके चुनाव में सावधान रिें,
आप दो, तीन या चार प्रकार के व्यवसाय कर सकतेिैं।
टोकरी बनाना, हपं्रहंटंग प्रेस, कपडे का व्यवसाय आहद,
िब आप व्यापार के क्षेत्र में िोते िैं,
आपकी छठवीं ंज्ञानेद्धिय उद्यत िोती िै
और आपका हनदेिन करती िै।
ईश्वर में पूणि आस्था रद्धखए,
वे आपको अवश्य हनदेिन देंगे,
वे आपके भीतर हनवास करने वाले और अन्तुः िासक िैं।

सौदे में हववाद करना त्याग दें

व्यापार में सौदे में हववाद करना बहुत बुरा िै,
यि बुरा प्रभाव हनहमित करता िै,
आप अपने ग्रािक खो देंगे,
एक हनहश्चत मूल्य रखें,
अपने व्यवसाय के प्रहत हवश्वसनीय और ईमानदार रिें,
आपको अनहगनत ग्रािक प्राप्त िोंगे,
समस्त िन आपकी ओर द्धखंचे चले आयेंगे,
आप बहुत नाम कमायेंगे,
आप अपने व्यापार में उन्नहत करेंगे।

उद्योगी बनें

आप मन्त्री या उच्च न्यायालय के िि भी बन िायें

तो भी आप धनी र्नीं ंबन सकते,
मात्र उद्योग िी आपको धनवान् बना सकता िै।
ध्यान दो! श्री हबरला, टाटा, ड़िफो, धानुकर
उद्योग-धंधे से हकतने धनवान् िो गये।
आइल हमल, कपड़िा हमल, िूट हमल,
साबुन का कारखाना, हबसुकुट का कारखाना, पेपर हमल,
क्किर का कारखाना, चावल हमल, लिो का कारखाना,
कढ़ाई का कारखाना, सूत हमल प्रारम्भ करें।
सबसे पिले सारे संसार की यात्रा करके आयें,
सभी कारखानों ंऔर हमलों ंको देखें,
उद्योग की सभी गिु बातों ंको सीखें,
तब कायि प्रारम्भ करें।

या, कृहर्-कमि करें

मन्त्री पद, हवधायक या
ड़िबिो सदस् पद के प्रहत आकर्िण छोड़ें।
यहद आपके पास पैतृक भूहम िै, कृहर्-कमि करें।
लिा का अनुभव न करें,
यि एक गौरविाली, हनष्ंकंटक व्यापार िै।
यहद आप पसन्द करते िैं तो
कोट, पैंट, टाई, िूते भी पिन सकते िैं।
एक कृहर् मिाहवद्यालय में तीन मिा अध्ययन करें,
पौधों ंऔर फलदार वृक्षों ंके बारे में अध्ययन िेतु
एक छोटा सत्र करें,
एक गौिाला और िेरी रखें,
गेहं, चावल और सब्जियाँ उगायें,
आप भरपूर धन प्रा कर सकते िैं,
आप अच्छा स्वास्थ्य और िु वायु का लाभ प्रा करेंगे।
आप कसे्बे के िीवन और सभ्यता के रोगों ंसे मुक्त रिंगे।
आप िु दूध और घी की पूहति कर सकते िैं
इस तरि आप समाि-सेवा भी करेंगे,
बचे्चे िो हक भहवष्य के नागररक िैं, स्वस्थ िोंगें।

मृतुयु-पत्र िारा अहधक धन न छोड़ें

अपने पुत्रों ंकोअच्छीहिक्षादें,
उनके हलएअहधकसम्पहत्तनछोड़ें,
उनें् स्वयंअििनकरनेदें,
उनें् स्वयंअपनेपैरों ंपरिखड़ेिोनेदें,

प्रते्येक वसुतु दान में दे दें,
अचे्छे गुणों ंका िअिन करें,
वे आलसी िो िायेंगे,
यहद आप उनें् अहधक धन देंगे।
वे मद्यपान, द्यूतक्रीड़ा और वेश्यावृहत्तमें
आपके धन का अपव्यय करेंगे,
और आपके पररवार पर कलंक लगायेंगे।

अपने धन का सदुपयोग करें

वो हिन पर ईश्वर की कृ पा िोती िै,
िी सितं्संग का लाभ लेते िैं,
वे धन का सदुपयोग करते िैं।
वेआश्रमों, ंमद्धन्दरों, ंतालाबों, ंकुओं, ं
समिा-सेवीसंस्थानों, ंपाठिालाओं, ंअनाथाश्रमों, ं
हचहकत्सालयों ं आहद का हनमाण करते िैं।
वे यिााँ पर श्रे्रेष्ठता प्रिा करते िैं
और स्वगि में सुख का उपभोग करते िैं।
धन िन-कल्याण के कायों िेतु बना िै,
धन का िअिन करो और दान में व्यय करो।
यि तुम्हारे हृदय को िुि करेगा
और हदव्य ज्योहत के उद्गम की ओर अग्रसर करेगा।
आपका नाम धरती पर अमर िो िायेगा।

हितीय अध्याय

सफलता के मागि

सफलता के रिस्

प्रहतक्षण समय के पाबन्द रिं,
अपने कायिालय समय से आधा घण्टे पिले पहुँचें,
कायिालय को समय के आधा घण्टे बाद छिों,
अहधकारी या स्वामी की आज्ञा का पालन करें,
उनके प्रहत हवश्वसनीय और सत्यवादी रिं,
उनके घरेलू और व्यद्धक्तगत कामों ंमें सिायता करें,
इस तरि उनके हृदय को िीतें,
उनके हृदय में गिरे उतर िायें,
वि आपको कभी निीं ंछिोंगे।
वे आपको अहधक लाभ और हविेर् वेतन-वृद्धि प्रदान करेंगे,
वे आपके अधीन िो िायेंगे,
आप कायिालय के सवेसविा िोंगें,
वे आपको चेक पर िस्ताक्षर की अनुमहत देंगे,
वे आप पर पूणि हवश्वास करेंगे,
वे आपसे अपने पुत्र या भाई की भााँहत
से्नि, प्रेम और आदर का व्यविार करेंगे।
यि सफलता और प्रचुरता का रिस् िै।
िेराम, मेरे िब्ों ंको सदा ध्यान में रखो।

स्वास्थ्य िी सम्पहत्त िै

स्वास्थ्य मिानतम सम्पहत्त िै।
हबना अचे्छे स्वास्थ्य के आप कोई काम निीं ं कर सकते।
हबनाइसकेआपधनकाअििनिनिीं ंकरसकते।
हबना इसके आप अपना भोिन निीं ं पचा सकते, इ
सके हबना आपका िीवन दुःखी िो िायेगा।
इसहलए इस स्वास्थ्य को
अचे्छे भोिन, सूयि-स्नान,
उहचत व्यायाम, हवश्राम और अच्छी हनिा,
िुि वायु और िु िल,
ब्रह्मचयि, अचे्छे हवचार, प्राथिना और ध्यान,
स्वास्थ्य और आरोग्य के हनयमों ं का दृढ़ता से पालन,

साफ-सफाई और सनुतुहलत जिार िारा प्रिा करें।

ल्दी सोयें, िल्दी िागें

राहत्र ९ या १० बिे सो िायें,
य्यिा को प्रातुः ४ बिे त्याग दें,
१ घण्टे प्राथिना, िप करें और ध्यान करें।
प्रातुःकाल तीं से भ्रमण िेतु िायें,
यहद आप प्रातुः िीघ्र िागेंगे
और हदन का िुभारम्भ प्राथिना आहद से करेंगे,
आपके हदन-भर के कायों में अनुरूपता िोगी।
आपके पास हदन के कामों ं के बारे में सोचने िेतु
सिे 'इसे कै से हकया िाये?' 'हकससे हमलना िै ?'
आहद सोचने िेतु पयाि समय िोगा,
राहत्रकेसमययिबआपिय्यापरहवश्रामिेतुिायें,
अपनी आध्याह्मिक दैनद्धन्दनी भरें,
आपने िो गलहतयाँ कीं, ं उन्हें हलखें,
आप िीघ्र हवकास करेंगे।

कभी ऋण न लें

अपनी आय का दस प्रहतित दान करें,
आपके पाप धुल िायेंगे,
और अहधक धन की वर्ि िोगी,
कपिे के अनुपात में कोट काटें,
अपनी आय से अहधक व्यय न करें,
प्रहत मिा आय में से एक भाग सदा बचायें,
'सादा िीवन, उच्च हवचार' का अभ्यास करें।
कभी ऋण न लें।
िो ऋण लेने िाता िै, वि दुःख लेने िाता िै।
सादे वस्त्र पिनें, सादा भोिन करें,
अपनी आदतों ं में सरल बनें।

द्यूतक्रीिा न करें

आप अपनी सारी सम्पहत्त खो देंगे,
आप बहुत बुरा नाम अर्जित करेंगे,
लोग आपको िुआरी कि कर पुकारेंगे,

अपने िाल में फाँ सा कर आपका हवनाि करने िेतु
द्यूत माया का चारा िै।
यि मद्य या नाचने वाली लड़की की भााँहत प्रलोभी िै,
एक बार आप फाँ स गये, आप सदा के हलए दद्धण्डत िो गये,
अब आपके बचाव का कोई साधन निीं ं िै।
ुिआरयों ं के साथ मेल–िोल न रखें,
घुिदौ देखने न िायें,
छोटी-सी पूाँिी से भी िुआ न खेलें,
यि हसगरेट पीने की तरि िी िै,

हसगरेट पीने वाला,
अपने हसगरेट पीने वाले हमत्र के प्रसाद (हसगरेट) का
साथ दे कर हसगरेट पीना आरम्भ करता िै,
बाद में वि कु छ हिबे्बे हसगरेट हनत्य पी िाता िै।

मद्यपान त्याग दें

मद्यपान प्राण नािक अहभिाप िै,
कई नष्ट िो गये,
यि मनुष्य की िीवनी–िद्धक्त का समूल नाि कर देता िै,
यि अपयि, अनादर, रोग लाता िै,
पैसा हनरथिक व्यय िोता िै, िीवन हनष्प्रयोिन िो िाता िै,
िािी व्यथि िाती िै, समय व्यथि िाया िोता िै,
यि मनुष्य को िीघ्रता से कब्र की ओर ले िाता िै,
इसहलए इसे मत हपयो, इसे स्पिि भी मत करो,
यहद तुम हपयक्कि िो,
एक िी बार में इसे त्याग दो, पूणितया त्याग दो,
यहद धीरे-धीरे छोड़ोगे, तो तुम इसे त्याग निीं ं पाओगे,
तब तुमको हनराििानक असफलता िाथ लगेगी,
हसगरेट पीना, भााँग, मद्यपान
इनको एक-समान िी िानो,
ये सभीएक-दूसरेकेहमत्रिैंऔरमद्यकेबिेभाईिैं।

हमत्र,हनराि न िों!ं

हमत्र, कहठनाइयों,ं व्यापार में िाहन, हवपहत्तयों,ं
रोग, असफलता आहद में हनराि न िों।ं
सािसी बनें, प्रसन्न रिें,
भहवष्य के कामों ंके हलए स्वयं को िद्धक्तिाली बनायें,

अपने भीतर सिास लायें,
प्राथिना, िप करें, ध्यान करें,
बुद्धिमान् लोगों ं से सलिा लें,
अपनी दुबिलता और दोर्ों ं को दूर करें,
 ीिख़ीौायेंऔरॐॐॐकाागिनकरें,
सदैव तत्काल बुद्धि रखें।
सने्दिे रहित उत्सिा और सिास के साथ
वीरतापूविक िे वीर, आगे बढ़ो!
कोई नैराश्यनिीं, ंहनरािनिो,
एक उज्ज्वलभहवष्यआपकीरािदेखरिािै,
ईश्वर प्रत्येककायिआपकेकल्याणिेतुकरतािैं,
असफलता सफलता की सीहढ़यााँ िैं।

हनत्य ध्यान करें

अच्छी एकाग्रता वाला व्यद्धक्त
थोिे समय में
अत्यहधक कायि कर सकता िै।
एकाग्रता व्यापार, कायिालय, अध्ययन,
आध्याद्धिक खिो, िीवन में सफलता,
संगीत आहद में उपयोगी िै,
इसहलए हचत्त की एकाग्रता का हवकास करें।
प्रातुःकाल ४ बिे
आाँखें बन्द करके पद्मासन में बैठें ।
भगवान् हवष्णु, भगवान् कृ ष्ण, भगवान् राम,
भगवान् हिव या ॐ के रूप का ध्यान करें।
एक बार पुनुः िाम ५ बिे या ८ बिे बैठें।

लक्ष्मी मन्त्र का िप करें

लक्ष्मी िी धन की देवी िैं।
'ॐ श्री मिालक्ष्म्यै नमुः'
(मैं श्री मिालक्ष्मी देवी को प्रणाम करता हाँ)
इसका िप श्रिा और भद्धक्त के साथ करें,
प्रातुःकाल और बाद में पााँच, दस या बीस माला िप हनत्य करें,
इस िप में हनयहमत रिें,
अगर कर सकें, रिो दो सौ माला िप करें।
मिालक्ष्मी देवी का हचत्र अपने सामने रखें।

आप थ़िोी पिूा भी कर सकते िैं।
पुष्प, फल, खीर आहद अहपित करें।
धूप, दीप, कपूर, बत्ती िलायें।
लक्ष्मी मन्त्र से िवन करें,
यहद सम्भव िो,
कुछ ब्राह्मणों,ं गरीबों ंऔर साधुओं ंको भिोन करायें।

भुद्धक्त और मुद्धक्त

अपने िप, सन्ध्या, प्राथिना, ध्यान और
धमिग्रन्ों ंके स्वाध्याय में हनयहमत रिें,
ईश्वर आपको भुद्धक्त, मुद्धक्त देंगे।
भुद्धक्त सांसाररक उपभोग िै।
माँ गायत्री आपको ऐश्वयि, िाद्धन्त, मुद्धक्त और
आनन्द प्रदान करेंगी,
इसहलए आध्याद्धिक साधना की उपेक्षा न करें।
गायत्री माता से प्राथिना करें, उनके रूप का ध्यान करें।
गायत्री मन्त्र का िप करें,
आप सब-कुछ प्रिा करेंगे।
उन्ोंनें अपने भक्त हवद्यारण्य को
प्रसन्न करने के हलए स्वणि की वरिा की थी।

तृतीय अध्याय

आन्तररक तैयारी

िुचिररत्र रखें

चररत्र िी िद्धक्त और सम्पहत्त ै;

सद्गुणों ंका अिन कर
और दुगिुणों ंको दूर कर
िुचररत्र का हवकास कीहिए।
पुनुः-पुनुः प्रयास कीहिए।
सतं्संग में िाइए।
प्रेरणाप्रद पुस्तकों ंका स्वाध्याय कीहिए।
'िीवन में सफलता के रिस्' पुस्तक के अनुसार चहलए।
िुधमिानुरूप िीवन यापन कीहिए।
चररत्र हवीन िीवन मृतक के समान िै।
'सन्त-चररत्र' पुस्तक का अध्ययन करें।
उनके गुणों ंको हृदय में उतारने का प्रयत्न कीहिए।
अपने सामने
भगवान् बुि, प्रभु ईसा, भगवान् राम,
भीष्म हपतामि, युहधहष्ठर, िंकराचायि का
मानहसक हचत्र और आिदि रखें।

सद्गुणों ंका हवकास करें

धैयि, सहिष्णुता,
सरलता, योग्यता, द्धस्थरता,
अध्यवसाय, सािस,
हनष्कपटता, सत्यवाहदता, हवनम्रता,
हनष्काय कमि के प्रहत उत्सािा, त्याग,
हदव्य प्रेम, अहिंसा, िुता,
हववेक, हवचार िद्धक्त,
करुणा, हचत्त की एकाग्रता, उदारता आहद
गुणों ंकाहवकासकरें,
आप प्रत्येकसािहसककायिमेंसफलिोंगें,
आप हवपुलआध्याद्धिकसम्पदाभीप्रािकरेंगे।

सत्यवादी बनें

अपने हवचारों ंके साथ वाणी का समन्वय करें;
अपनी वाणी के साथ कार्यों का समन्वय करें।
अपने वचन पर िर मूल्य पर द्धस्थर रिें।
सदैव किें-मैं प्रयास करूँगा,
तब आप सुरहक्षत रिेंगे,
आप आकर्िण का कें बन िायेंगे,
आपका आचरण गम्भीर िोना चाहिए,

आप एक समृि व्यवसाय के स्वामी िोंगें,
क्ोंहंक आप सत्यवादी मनुष्य िैं।

ब्रह्मचयि का पालन करें

ब्रह्मचयि िी सच्ची सम्पहत्त िै,
यि समृद्धि, िाद्धन्त, िद्धक्त, सफलता, आिज्ञान,
नैहतक और आध्याद्धिक ज्ञान प्राद्धि िेतु अत्यावश्यक िै।
ब्रह्मचयि िीवन में िद्धक्त, हदव्यता, कल्याण तथा
स्मरण िद्धक्त की वृद्धि करता िै,
स्वास्थ्य, परमानन्द और अमरव की वृहष्ट करता िै,
इसहलए ब्रह्मचयि का पालन करें।
इस बहुमूल्य कोर् का अपव्यय न करें ।
साद्धत्त्वक भोिन लें, िप करें, ध्यान करें ।
सन्तों ं के साथ सत्संग का लाभ लें ।
गीता, उपहनर्द्, बाइहबल, कु रान का अध्ययन करें ।

वैराग्य का हवकास करें

अनुराग से मुद्धक्त वैराग्य िै,
वैराग्य आपको इस अखण्ड ब्रह्माण्ड में
सबसे धनवान् बनाता िै,
आप असीम आध्याद्धिक सम्पदा
िो अनश्वर और अनन्त िै, प्राि करेंगे ।
कोई िाकू इसे लूट निीं ंसकता।
यि परम श्ेष्ठ सम्पहत्त िै।
कुबेर और इि भी आपके चरणों ंमें झुकेंगे ।
वैराग्य वास्तव में अनमोल कोर् िै ।
इसकी उच्चतम द्धस्थहत प्राि करें,
पूणि या परा वैराग्य प्राि करें।

सूमृहत का हवकास करें

िीवन में सफलता और आध्याद्धिक प्रगहत के हलए
सूमृहत प्रथम आवश्यक िै,
हबना सूमृहत या क्षीण सूमृहत वाले व्यद्धक्त को
काम से बािर हनकाल हदया िाता िै,
वि कोई व्यवसाय निीं ंकर सकता,

उसे हवद्या अध्ययन में कोई पररणाम निीं ंप्रा िोता,
इसहलए अच्छी सूमृहत धारणा का अभ्यास करें,
'प्ेरेद्धिकल लेसन्स ऑन योगा' में बताये गये
सूमृहत के व्यायामों ंका अभ्यास करें;
प्राणायाम, ब्रह्मचयि, त्राटक, िीर्ासन आहद का अभ्यास करें।
ब्राह्मी, बादाम लें;
पि करें, ध्यान करें, प्राथिना करें ।

संकल्प का हवकास करें

यहद आप अटल और दृढ़ संकल्प के स्वामी िैं,
तो आप हकसी भी सािहसक कायि में प्रगहत करेंगे,
आप सभी पर िासन करेंगे,
पवित आपके सामने चूर-चूर िो िायेंगे,
सागर आपके सामने सूख िायेंगे,
आप अच्छी तरि ध्यान करें,
अपने संकल्प का धीरे-धीरे हवकास करें,
वासनाओं ंकोीतें,इच्छाओं ंकोहनयद्धन्त्रतकरें,
िुिआिा पर हनत्य ध्यान करें,
यि आपके संकल्प को िद्धक्तिाली और िुि करेगा।
दृढ़ता से प्रहतज्ञा करें :
मेरासंकल्पदृढ़िै ॐ ॐ ॐ
कोईमुझेरोकनिीं ंसकता ॐ ॐ ॐ
मेरा संकल्प िुि और दृढ़ िै ॐ ॐ ॐ

दृढ़ हनश्चय रखें

अच्छी तरि सोच-हवचार कर,
भली प्रकार हचन्तन करें,
तब एक हनहश्चत हनणिय पर आयें।
अपने संकल्प पर दृढ़ रिें,
हफर हंकंहचत् मात्र भी हवचहलत न िों, ं
दृढ़ बनें, अहिग बनें, वज्रमय बनें।
िो दृढ़ संकल्प वाले निीं ंिोते,
िो अद्धस्थर बुद्धि वाले िोते िैं,
हकसी कायि में उन्ें हकसी प्रकार की सफलता निीं ंहमलती,
वे एक तृण की भााँहत इधर से उधर धक्के खाते रिते िैं।
दृढ़ संकल्प और हनणिय एक-साथ चलते िैं।
तामहसक िठ हनणिय निीं ंिै,

यि िठ बुद्धि िै।
इस दुष्ट प्रकृहत को त्याग दें।

कल्पना, आचरण, सद्धयविार

लिा, भीरुता और स्त्री स्वभाव वाली प्रकृहत को त्याग दें;
पराक्रमी बनें, सदैव प्रसन्न रिें।
उत्सािी प्रकृहत, समय की पाबन्दी,
हनयहमतता का हवकास करें।
पिले कल्पना करें,
हफर आचरण में लायें,
तब सद्धयविार का अभ्यास करें;
इस हत्रयुद्धक्त को याद रखें :
"कल्पना, आचरण, सद्धयविार।"
हमत्रता, सिौन्यता, सामाहिक प्रकृहत,
सबको अंगीकार करना, सबके साथ सिौन्यता
और सबके साथ सामंिस् बढ़ायें।
इसका अथि िै-स्वाथि में कमी,
रागि-ेर्, इच्छाओं,ं अहनच्छाओं ंको तनु करना;
अबआप तीनों ंलोकों ंमें हवियी िोंगें।

चतुथि अध्याय

पूणिता प्रिा करें

सबसे धनवान् कौन िै?

वि िो इच्छाओं ं और वासनाओं ं से रहित िै,
वि िो मैं और मेरा से रहित िै,
वि िो सदा अपने आिस्वरूप में द्धस्थत िै,
वि िो अहवनिी आिा में हवश्राम करता िै,
वि िो काम, क्रोध, अहभमान से मुक्त िै,
हिसके पास समदृहष्ट और सनुतुलन िै,
वि इस संसार में सबसे धनवान् िै।
विआवश्यकताओं,ंहवचारों,ंहचन्ताओं ंऔरभयसे मुक्त ि,
वि सदा िान्त, प्रसन्न और धन्य िै।
ऐसे मिान् िन सदा यिस्वी िों ं !

धन के दोर्

धन का उपािान दुःखदायी िै,
धन का संरक्षण दुःखदायी िै,
यहद यि कम िो िाये तो और अहधक दुःखदायी िै,
यहद यि खो िाये तो अत्यन्त दुःखदायी िै।
सम्पहत्त से अिंकार, हमथ्या अहभमान प्रवेि करता िै।
यि स्वाथि को ठोस या घनीभूत करता िै।
इससे व्यद्धक्त ईश्वर तथा उनकी हदव्य प्रकृहत को
हवसूमृत कर देता िै,
यि मन की महलनता और उन्माद उत्पन्न करता िै,
यि मन पर आवरण चढ़ा देता िै,
यि व्यद्धक्त को दुराचारी िीवन िीने िेतु प्रेररत करता िै,
यि उसे द्यूतक्रीिा और मद्यपान िेतु उद्यत करता िै,
अमर िीवन िीने के हलए,
इस मिा वि एक स्त्री को रखता िै,
अगले मिा उसे एक लाख रुपये के चेक के साथ भेिता िै,
वि प्रहतक्षण हभन्न-हभन्न द्धस्त्रयों ंकी लालसा रखता िै
िो हक वास्तव में घोर अपमानिनक और पहतत िीवन िै।

रुपये का कोई मूल्य निीं ंिै

यहदआपकेभीतरसच्चेवैराग्यऔरहववेककाउदयिोगया ि,
यहद आप माया और संसार की असार प्रकृ हत और
अनन्त ब्रह्म के परमानन्द स्वरूप को िान गये िैं
तो तीनों ं लोकों ं की सम्पहत्त के प्रहत
आपको कोई आकर्िण निीं ं िोगा,
यि आपकेहलएमृगतृष्णायाघासकेतृणकेसमानिै।

बि आपवनमेंरिकर
एकान्तवास की िाद्धन्त का आनन्द उठायेंगे,
बि आपसंन्यासिीीवनमेंप्रवृत्तिोंगें,
स्वणिमुिा, िीरा या िालर का आपके हलए क्ा मूल्य िोगा ?
यि लालसिौ,यिअज्ञानतिौ
िी धन काकाल्पहनकमूल्यहनहमितकरतिौ।

धन आता िै और िाता िै

यि इसकी प्रकृहत िै,
यि माया या संसार िै,
यि सम्पहत्त का अथि िै,
एक पंखा खीचंने वाला साहकार बन िाता िै,
एक सेठ या लालािी गरीब बन िाते िैं,
हबिार और क्वेटा के भूकम्प के समय
पाहकस्तान हवभािन के समय
अरबपहत स्रिकों ंपर भीख माँग रिे थे,
इस संसार में कोई सुरहक्षत निीं।ं
इस नश्वर सम्पहत्त पर हनभिर मत िो,
आिा की अहवनािी सम्पहत्त पर हनभिर रिो,
हक तुम सदा हनिंक और सुरहक्षत िो ।

इच्छा रहित बनें

इच्छा रहित बनो,
तुम इस समूपूणि िगत् में
सबसे धनवान् बन िाओगे,
इच्छाएँ तुम्हें इस िगत् में हभखाररयों ंका हभखारी बना देती िैं।
समस्त ऋद्धियाँ और हसद्धियाँ आपके चरणों ंमें लोटेंगी,
वे आपकी दाहसयाँ िो िायेंगी ।
आप ईश्वर की समूपूणि सम्पदा,
समस्त हदव्य ऐश्वयों का उपभोग करेंगे।
आप िालरों ंऔर सोने का ढेर लगा सकते िैं,
यि समृद्धि का रिस् िै।

परमानन्द की पत्नी रहित द्धस्थहत

हववेकी सोचो – 'मैं कौन हाँ ?'

उस पत्नी रहित परमानन्द की द्धस्थहत को प्रिा करो,
उस पुत्र रहित द्धस्थहत
उस घर रहित द्धस्थहत-अहनकेत,
उस हनिा रहित द्धस्थहत
उस कुषुधा रहित द्धस्थहत
उस दिे रहित अवस्था को प्रिा करो,
धन की आवश्यकता अब किाँ?
आप हबना धन के, हबना पत्नी के, हबना पुत्र और बाँगले के,
हबना लिू, काफी और कार के
आप परमानन्द में िैं।
आप अब आि-सम्राट् या स्वयं के िासक िैं।

पि की सम्पहत्त

इस श्रेष्ठ सम्पहत्त में हनत्य वृद्धि करें, अपने िप में वृद्धि करें,
ईश्वर के अनन्त सागर में
यि मिानतम पूाँिी िै। बैठेहुए,बातेंकरतेहुए,खातेहुए,चलते हुए श्री राम का िप करो, इस िप को आदत बना लो।
यि िी सच्ची सम्पहत्त िै
िो आपके साथ िायेगी,
इस सम्पहत्त का हनत्य संग्रि करो, यिआपकोिाद्धन्तऔरमुद्धक्तप्रदानकरेगी।

मिान् सम्पहत्त-मोक्ष

आि-साक्षात्कार मिान् सम्पहत्त िै,
यि असीम सम्पदा िै,
सांसाररक सम्पहत्त की समस्त इच्छाएाँ लिु िो िायेंगी,
सभी लालसाएाँ और अहभलाषाएाँ नष्ट िो िायेंगी,
भीतर-बािर पूणिता िोगी,
यि एक अवणिनीय द्धस्थहत िै,
यि आपको रािाओं का रािा,
रािकुमारों का रािकुमार बना देगी।
इस मिान् सम्पहत्त को प्रिा करने के हलए
चतुस्साधनों और आिा के ऊपर ध्यान िारा

प्रयत्न, प्रयत्न, प्रयत्न, प्रयत्न करो।

पररहिष्ट

पररडिष्ट १

धन के उपिान पर

एक िमीदांर ने वर्ों से संहचत पूाँिी ४००० रुपये से एक सुन्दर घर बनवाया। उसने इसे स्वयं अपने हनरीक्षण में बनवाया। अचानक उसे राहत्र में हनत्य एक स्वप्न आने लगा हक उसका घर हगर गया िै। वि भयंकर रूप से हचद्धन्तत िो गया। उसने ज्योहतहर्यों ंसे सलाि ली, उनका भी यिी किना था हक यि भवन खड़ा निीं ंरिेगा। अब उसके दु:ख की कोई सीमा निीं ंथी।

उसकी बुद्धिमान् पत्नी ने उसे एक उपाय बताया हक वि उस घर को ४००० रुपये में बेच दे। सौ-सौ रुपये के चालीस नोट ले कर वि हकराये के घर में रिने चला गया। उस रात वि प्रसन्नतापूविक सोया। सुबि िागने पर उसने सुना हक कुछ उपिहवयों ंने उसके पुराने घर को आग लगा दी और वि भग्नावर्ेर् में पररवहतित िो गया। वि स्वयं विााँ गया और लेर् मात्र दु:ख के हबना उसने इस आश्चयि को अपनी आाँखों ंसे देखा, वि प्रसन्न था हक उसने वि घर समय पर हवक्रय कर हदया और अब यि उसका निीं ंथा । उसने अपनी हतिोरी में रखे ४००० रुपयों ंको याद हकया और दौड़ कर अपने घर वापस आ गया। वि दु:स्वप्न हफर आया। लुटेरों ंके हवचार ने उसे रात-भर सोने निीं ंहदया। उसे अपने भाइयों,ं यिााँ तक हक अपने पुत्रों ंपर भी िंका िोने लगी हक किीं ंवे उसका धन लूट कर न ले िायें। इस द्धस्थहत में भी उसकी पत्नी ने पुनः आ कर उसकी रक्षा की। पत्नी की सलाि पर उसने अपना धन बैंक में िमा कर हदया और बैंक की रसीद प्राप्त कर ली। अगले हदन समाचार हमला हक बैंक में भयंकर डाका पड़ा और सारा धन लुट गया; लेहकन िमींदार को हचन्ता निीं ंहुई, क्ोंहक उसके पास रुपयों ंकी रसीद थी।

एक भय उसे पुनः भयग्रस्त करने लगा हक उसके पुत्र उसे हवर् दे देंगे और बैंक से उस रसीद के द्वारा धन के हलए दावा करेंगे। यि हवचार उसे पीड़ा देने लगा। गााँव के एक साधु उसके पास आये और उससे पास में द्धस्थत अनाथाश्रम के हलए सिायता िेतु प्राथिना करने लगे। िमीदांर इसे ईश्वर का आदेर् मान कर भीतर गया और उसने रसीद ला कर अनाथाश्रम के सिायताथि साधु को दे दी। उस िमीदांर के नाम से अनाथ बच्चों ंके हलए भवन बनाया गया। उसकी प्रहसद्धि दूर-दूर तक सुप्रहतहष्ठत दानी व्यद्धक्त के रूप में फैल गयी। लोग उसका बहुत सम्मान करने लगे । अब उसे कोई भय निीं ंथा। उसे ज्ञात िो गया था हक िब तक वि िीहवत रिेगा, तब तक उसके पड़ोसी उसे प्रसन्न रखेंगे और वि र्ाद्धन्तपूविक रिेगा। साथ िी यि भी हक िब वि इस संसार को छोड़ेगा, तो यि दान और अनाथ बच्चों ंकी प्राथिनाएाँ परलोक में भी उसके हलए कल्याणकारी िोंगी।

डिक्षा : आसद्धक्त दु:ख लाती िै। इसके कारण हिसे तुम अपना समझते िो, वि तुम्हारे स्वयं के र्त्रु में बदल िाता िै। इससे िी सारे दु:ख उत्पन्न िोते िैं। िब आप इद्धन्द्रय-हवर्यों ंसे स्वयं को अलग कर लेते िैं, तो यि आपके क्लेर् को समाप्त कर देता िै। आसद्धक्त को िी से

काट िालो। प्रत्येक वसुतु को उस प्रभु का मान कर व्यविार करो, तो तुम िाद्धन्त और आनन्द का उपभोग करोगे।

पररडिष्ट २

धन के व्यय पर

बीरबल अकबर का हप्रय मन्त्री था। वि अपनी बुद्धिमानी और प्रखर बुद्धि के हलए प्रहसि था।

बीरबल की पत्नी का भाई उससे ईष्यिा करता था। वि सोचता था हक बाििा इस व्यद्धक्त से अत्यहधक प्रसन्न क्ों ंिै? मैं भी बीरबल की भााँहत राज्य का प्रबि कर सकता हाँ। कुछ कुहटल हवहधयों ंारा वि बाििा तक पहुाँच गया और उनसे बोला हक आप बीरबल को पद से िटा दें, मैं मन्त्री के काम को उससे अहधक योग्यतापूविक और ईमानदारी से कर सकता हाँ।

बि बीरबल ने यि सुना, तो वि मुस्कराया और अपने साले को हिक्षा देने के बारे में सोचा, उसने अपने पद से त्याग-पत्र दे हदया तथा उसे अपनी िगि हनयुक्त कर हदया और राज्य छोड़ कर चला गया।

अकबर ने अपने नये मन्त्री की योग्यता की परीक्षा लेने के हलए उसे ५०० रुपये हदये और
किा हक तुम्हें इन ५०० रुपयों ंको इस भााँहत व्यय करना िै हक ५०० रुपये मैं इस लोक में प्रिा करूाँ, ५०० रुपये परलोक में प्रिा करूाँ तथा ५०० रुपये न इस लोक में प्रिा करूाँ, न परलोक
में और इसके बाद तुम मुझे ५०० रुपये वापस कर दो।

नया मन्त्री ब्रिा हचद्धन्तत हुआ। उसे इसके हलए कोई मागि सूझ निीं ंप्रि रिा था। उसने
कई रातें िागते हुए हबतायीं।ं अब उसे भोिन भी अच्छा निीं ंलगता। वि कुछ हदनों ंमें कमिोर
िो गया। उसकी पत्नी ने उसे बीरबल से सिायता लेने का सुझाव हदया, तथा उसे स्वयं भी इसके
अहतररक्त कोई मागि निीं ंसूझा ।

बीरबल ने उससे किा- "रुपये मुझे दो, मैं सब कर दूाँगा।" नये मन्त्री ने बीरबल को वे
५०० रुपये दे हदये। बीरबल सड़क के हकनारे पैदल चलते हुए राज्य में प्रहवष्ट हुआ, विााँ एक
ब्रिा व्यापारी अपनी पुत्री का हववाि समारोि आयोहित कर रिा था। बीरबल उसके घर में गया।
खुले पण्डाल के बीच उसने घोषणा की-"व्यापारी िी ! बादशाि सािब ने हववाि में भेंट करने के
हलए ५०० रुपये भेिे िैं और यि भेंट आपको देने के हलए मुझे हनयुक्त हकया िै।" वि व्यापारी
बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बीरबल की खूब आवभगत की और वापसी में उपिारस्वरूप कई वस्तुएाँ
और बहुत-सा धन भी हदया।

बीरबल पास के गााँव में गया। उसने उपिार में प्रिा धन में से ५०० रुपये में बहुत से खाद्य
पदाथि और हमठाइयााँ क्रय करके बादशाि के नाम से गरीबों ंमें बााँट दीं।ं उसके बाद वि कस्बे में
आया और विााँ एक नृत्य सभा का आयोिन हकया, सभी नतिकों ंतथा संगीतज्ञों ंको आमद्धन्त्रत हकया
और इस पर ५०० रुपये व्यय हकये। इसके बाद बीरबल अकबर के दरबार में गया। अकबर
बीरबल को वापस दरबार में आया देख कर ब्रिा प्रसन्न हुआ। बीरबल ने बादशाि से किा-
“बादशाि सािब! ये रिे आपके ५०० रुपये। मैंने वि सब हकया, िो आपने मेरी पत्नी के भाई से
करने के हलए किा था।"

"कैसे?"

"५०० रुपये मैंने व्यापारी को आपकी ओर से भेंट में हदये, ये इस लोक के हलए। ५००
रुपये मैंने गरीबों ंके बीच बााँट हदये, वे आपको परलोक में हमलेंगे। ५०० रुपये मैंने नृत्य सभा में
व्यय हकये, वे न आपको इस लोक में हमलेंगे, न परलोक में। और, ये रिे आपके ५०० रुपये।"

यि देख कर बीरबल की पत्नी के भाई ने शमि से हसर झुका हलया। उसका अहभमान चूर-
चूर िो गया था। उसकी ईष्याि नष्ट िो गयी थी।

इस किानी की अन्य हशक्षा भी िै। वि धन िो आप अपने हमत्रों ंपर व्यय करते िैं, वि
आपको इस लोक में हमलता िै। िो धन आप दान में व्यय करते िैं, वि आपको परलोक में
ईश्वर के अनुग्रि और यशस्वी िीवन के रूप में हमलता िै और वि धन िो आप इद्धिय-सुखों ंिेतु
व्यय करते िैं, वि आपके हलए न इस लोक में सिायक िै और न परलोक में। इसहलए दान
करो और अनन्त सुख का उपभोग करो ।

पररडिष्ट ३

स्वहणिम कोर्

आप हदव्य िैं। अपनी हदव्य प्रकृहत का अनुभव करें और इसे हसि करें। आप अपने भाग्य के स्वामी िैं। दैहनक िीविन-संग्राम में िब दु:ख, कहठनाइयाँ और क्लेि आयें, तो हनरािा न िों। ं अपने भीतर सािस और आध्यात्मिक िक्ति लायें। आपके भीतर िक्ति और ज्ञान का हवपुल भण्डार िै। अपने भीतर गिरे उतरें। अन्तर की पहवत्र हत्रवेणी के अनश्वरता के पहवत्र िल में लीन िो िायें।
िब आप 'मैं अहवनािी आत्मा हाँ' का साक्षात्कार करेंगे, तो आप पूणिरूपेण हवश्रान्त, पुनर्नवीन और सिीव िोंगे।

अखण्ड ब्रह्माण्ड के हसिान्तों ंको समझें। िगत् में चतुराई से हवचरण करें। प्रकृहत के रिस्यों ंको िानें। मन को हनयन्त्रित करने के श्रेष्ठ उपायों ंको िानने का प्रयास करें। मन पर हविय प्राप्त करें। मन पर हविय िी वास्तव में प्रकृहत और संसार पर हविय िै। मन का हनग्रि िी आपको आत्म–िक्ति के स्रोत तक िाने योग्य बनायेगा और आप 'मैं अहवनािी आत्मा हाँ' का साक्षात्कार करेंगे।

िब कहठनाइयाँ और दु:ख आप पर पड़ें, हिम्मत हारें नहीं, ं असन्तोष न करें। प्रत्येक कहठनाई आपके हलए अपने संकल्प के हवकास और उसे दृढ़ बनाने िेतु सुअवसर िै। इसका स्वागत कीहिए। कहठनाइयाँ आपके संकल्प को िक्तििाली बनाती और आपकी सिन–िक्ति को बढ़ाती िैं और आपके मन को ईश्वर की ओर ले िाती िैं। उनका सामना मुस्कराहट के साथ करें। अपने वास्तहवक बल में आप अिेय िैं। आपको कोई क्षहत नहीं ंपहुँचा सकता। अपनी कहठनाइयों ं पर एक-एक करके हविय प्राप्त करें। यि नव–िीवन, यि और दैवी वैभवपूणि िीवन का िुभारम्भ िै। उत्कट आकांक्षा रखें और सार ग्रिण करें। आगे बढ़ें। सभी सद्गुणों, ं दैवी सम्पद िैसे सिन–िक्ति, दयालुता और सािस िो आपमें सुि िैं, उन्हें स्थाहपत करें। आध्यात्मिक पथ का अनुकरण करें। मानव के कष्टों ंका मूल गलत हवचार िैं। उहचत हवचारों, ं सिी कार्यों का अभ्यास कीहिए। एकता िेतु आत्मभाव से हनष्काम कमि कीहिए। यिी सिी कमि िै। िब आप सतत 'मैं अहवनािी आत्मा हाँ' का हचन्तन करते िैं, तो यि सिी हवचार िै।

पाप िैसी कोई वस्तु नहीं ंिै। पाप मात्र एक भूल िै। पाप का हनमाण मन से हुआ िै। िीहुआत्महवकास-प्रहक्रया में कुछ भूलें करती िी िै। भूलें आपकी सविश्रेष्ठ हिक्षक िैं। यहद आप हवचारकरेंगे,'मैं अहवनािी आत्मा हाँ' तो पाप का हवचार िवा में उड़ िायेगा।

तुम अडवनािी आत्मा हो

नवीन दृहष्टकोण रखें। स्वयं को हववेक, आनन्द, दूरदृहष्ट, उत्सािा और मेधा से अलंकृत करें। एक यिस्वी उज्ज्वल भहवष्य आपकी रिा देख रिा िै। भूतकाल पर हमट्टी िालें। आप चमत्कार कर सकते िैं। आप आश्चयि कर सकते िैं। आिा न छोड़ें। आप प्रहतकूल ग्रिों ंके प्रभाव को अपनी संकल्पि–द्धक्त से नष्ट कर सकते िैं। आप प्रकृहत के तत्त्वों ंपर िासन कर सकते िैं। आप दुष्ट िद्धक्तयों ंके प्रभाव और गिन हवरोधी बलों ंके प्रभाव को, िो आपके हवरुि कायि करते िैं, उदासीन कर सकते िैं। कइयों ंने ऐसा हकया िै। आप भी ऐसा िी करें । स्वीकारें, पिचानें और अपने िन्महसि अहधकार को तत्काल दृढ़तापूविक माँगें। "आप अहवनािी आत्मा िैं।"

संकल्प और आत्म-हवश्वास आत्म-साक्षात्कार िेतु अहत आवश्यक िैं। माण्डूक्योपहनर्द् में आप पायेंगे - "िो िद्धक्त हवीन िैं, िो तत्पर निीं ंिैं या िो हबना हकसी लक्ष्य के तपस्या करते िैं, वे इस आत्मा को निीं ंप्राप्त कर सकते। हकन्तु एक हववेकी पुरुर् यहद उक्त साधनों ंद्वारा प्रयत्न करता िै, तो उसकी आत्मा ब्रह्म में प्रवेि कर िाती िै।"

एक हिज्ञासु के हलए 'अभय' मित्त्वपूणि योग्यता िै। उसे इस िीवन को त्यागने िेतु प्रहतक्षण तैयार रिना चाहिए। इस क्षहणक हवर्यी िीवन को त्यागे हबना आन्तररक आध्याद्धत्मक िीवन की प्राद्धप्त निीं ंिो सकती। दैवी सम्पत् या दैवी गुण िो गीता के सोलिवें अध्याय के प्रथम श्लोक में वहणित िैं 'अभय' सविप्रथम आता िै। एक भीरु या कायर मनुष्य अपनी वास्तहवक मृत्यु से पूवि कई बार मर चुकता िै। िब आप एक बार अपनी आध्याद्धत्मक साधना का हनधािरण कर लें, तो चािे आपका िीवन िी क्यों ंन संकट में िो, उसे न छोड़ें। पराक्रमी बनें। कमर कस लें। द्धस्थर िो िायें। सत्य का साक्षात्कार करें। "आप अहवनािी आत्मा िैं," इसे सवित्र प्रदहिित करें।

मत किें-"कमि, कमि। कमि मेरे हलए यि लाये।" प्रयत्न करें, प्रयत्न करें। पुरुर्ाथि करें। तपस्या करें। हचत्त को एकाग्र करें। हनमिल बनें। ध्यान करें। भाग्यवादी न बनें। िड़ता के अधीन न िोिं मेमने की भाँहत हमहमयायें निीं।ं वेदान्त के िेर की तरि दिाड़ें- ॐ ॐ ॐ । देखो, माकिण्डेय िो हक प्रारब्धवि अपने सोलिवें वर्ि में मृत्यु का वरण करने वाला था, अपनी तपस्या के बल पर सोलि वर्ीय हचरंिीवी बालक हकस तरि बना। यि भी देखो, साहवत्री अपनी तपस्या के बल पर अपने मृत पहत का िीवन हकस तरि वापस ले आयी। हकस तरि बेंिाहमन फ्रेंकहलन और मिास उच्च न्यायालय के टी. मुत्तुस्वामी अय्यर ने अपने-आपको ऊँचा उठाया। याद रखो, मेरे हनरंिन हक मनुष्य अपने भाग्य का स्वामी िै। हवश्वाहमत्र ऋहर्, िो एक क्षहत्रय रािा थे, अपनी तपस्या के बल पर वहसष्ठ की भाँहत ब्रह्महर्ि बने और उन्ोंने अपनी तपस्या के बल पर हत्रिंकु के हलए तीसरे लोक का हनमािण हकया। िाकू मधाई और िगाई पहुँचे हुए सन्त बन गये। वे गौरांग-हनत्यानन्द भगवान् के हिष्य बने । िो दूसरों ंने हकया, वि आप भी कर सकते िैं। आप भी आश्चयि और चमत्कार कर सकते िैं, यहद आप अपने को आध्याद्धत्मक साधना, तपस्या और ध्यान में लगायें। िेम्स एलन द्वारा हलद्धखत पुस्तक 'पावटी टु पावर' को रुहच और ध्यान से पढ़ें। मेरे 'बीस आध्याद्धत्मक हनयम' और 'फोटी गोल्डेन पसेप्ट्स' का अनुकरण कीहिए। मेरी पुस्तक 'िीवन में सफलता के रिस्य' पढ़ें। आध्याद्धत्मक हदनचयाि में दृढ़ रिें। स्वयं को उत्सािा और लगनपूविक साधना में लगा दें। एक नैहष्ठक ब्रह्मचारी बनें। अपनी साधना में द्धस्थर रिें। "आप अमरता के पुत्र िैं।"

ो सौय ! हप्रय अहवनािी आिा ! सािसी बनें। िाे आप बेरोिगार िैं, िाे आपके पास खाने के हलए कुछ न िो, िाे आप हचथड़ों ंमें हलपटें िों,ं आपकी अहनवायि प्रकृहत सत्-हचत्-आनन्द िै। आपका बाह्य रूप यि नश्वर भौहतक िरीर छद्म तथा माया के िारा हनहमित िै। मुस्करायें, सीटी बिायें, िाँसें, कूदें, प्रसन्नता और िर्िाहतरेक से नाचें । ॐ ॐ ॐ, राम राम राम, श्याम श्याम श्याम, हिवोऽिं हिवोऽिं हिवोऽिं, सोऽिं सोऽिं सोऽिं गायें। इस मांस के हपंिरे से बािर आयें। आप यि नश्वर िरीर निीं िैं। आप रािाओं ंके रािा के पुत्र, सम्राटों ंके सम्राट्, उपहनर्दों ंके ब्रह्म, वि आिा िैं, िो आपकी हृदय-गुिा में सदैव हनवास करती िै, उसी तरि व्यविार करें, उसी तरि अनुभव करें। अपने िन्महसि अहधकार को दृढ़तापूविक इसी क्षण माँगें। कल-परसों ंनिीं,ं अभी इस क्षण से अनुभव करें, दृढ़तापूविक स्वीकारें, साक्षात्कार करें, पिचानें-"तत् वं अहस" । िे हनरंिन, तुम अहवनािी आिा िो।

तुम्हारी वतिमान व्याहध कमों की िुद्धि िै। यि तुम्हें उसकी और अहधक याद हदलाने के हलए, आपके हृदय में दया का धीरे-धीरे प्रवेि कराने के हलए, तुम्हें िद्धक्तिाली बनाने के हलए, तुम्हारी सिन िद्धक्त बढ़ाने के हलए आयी िै। कुन्ती ने भगवान् से प्राथिना की थी हक वे उसे सदा कष्ट िी दें, ताहक वि सदा उन्ें याद करती रिे। भक्त कष्टों ंमें अहधक प्रसन्न िोते िैं। रोग, ददि, हबचूछू, सपि और संकट ईश्वर के सन्ेिवािक िैं। भक्त उनका स्वागत प्रसन्न मुखाकृहत से करता िै। वि कभी असन्तोर् निीं ंकरता। वि एक बार और किता िै- "मैं तुम्हारा हाँ, मेरे स्वामी! तुम सब-कुछ मेरे कल्याण के हलए करते िो।"

मेरे हप्रय हनरंिन, दुभािग्य और नैराश्य के हलए स्थान िी किाँ िै ! आप ईश्वर के हप्रय िैं; इसीहलए वे आपको कष्ट देते िैं। यहद वे हकसी को अपनी ओर बुलाना चािते िैं, तो वे उसका सारा धन ले लेते िैं। वे उसके हप्रय सम्बद्धियों ंऔर नातेदारों ंका नाि कर देते िैं। वे उसके समस्त सुख के केन्द्रों ंको नष्ट कर देते िैं, हिससे हक उसका मन उनके चरण-कमलों ंमें पूणि हवश्राम कर सके। प्रत्ेयेक द्धस्थहत का सामना प्रसन्नतापूविक और उत्साि के साथ करें। उनके गूढ़ मागों को समझें। प्रत्ेयेक वस्तुु, प्रत्ेयेक मुखाकृहत, मुख-मण्डल में ईश्वर का दििन कीहिए। दृहष्ट से दूर, पर मन से दूर निीं।ं िब िम िारीररक रूप से ईश्वर से दूर रिते िैं, तो िम उनके अहधक हनकट िोते िैं। भगवान् कृष्ण स्वयं को अचानक छुपा लेते िैं, हिससे राधा और गोहपयों ंकी उनके दििनों ंकी प्यास और अहधक बढ़े। राधा की तरि गायें। गोहपयों ंकी तरि उनके दििन की प्यास रखें। भगवान् कृष्ण के अनुग्रि की कोई सीमा निीं ंिै। वे आपके अमर हमत्र िैं। वृन्दावन के बाँसुरी वाले, उनकी कृपा और देवकी के आनन्द को कभी न भूलें ।

सब पर दया करने वाले भगवान् आपकी हृदय-गुिा में हनवास करते िैं। वे आपके अत्यन्त हनकट िैं। आपने उन्ें हवसूमृत कर हदया िै; हकन्तुु हफर भी वे आपका ध्यान रखते िैं। वे अपनी लीला के खेल िेतु आपके िरीर और मन को योग्य साधन बनाना चािते िैं। वे आपकी आवश्यकताओं ंका प्रबि या आपकी सेवा आपसे अहधक अच्छी तरि कर सकते िैं। वि भार, िो आप अपने अज्ञानवि अनावश्यक रूप से अपने किों ंपर उठा रिे िैं, नीचे रख दीहिए। अपने स्व-हनहमित उत्तरदाहयवों ंको छोड़ दें और पूणि हवश्राम में िो िायें। उनमें पूणि हवश्वास रद्धखए। पूणि स्वतन्त्र आि-समपिण कीहिए। उनके पास अभी दौड़ चले िाइए। वे आपके स्वागत के हलए बाँिों ंको फैलाये खड़े िैं। वे आपके हलए सब-कुछ करेंगे। मेरा हवश्वास कीहिए। इसके हलए मुझसे वचन ले लीहिए। एक हििु की भाँहत अपना हृदय उनके हलए पूरी तरि खोल दें। मात्र एक बार व्याकुलता से उनसे किें-"मैं आपका हाँ, मेरे स्वामी सब आपका िै, आप िी करेंगे।"

हवयोग की खाई अब अन्तधिान िो गयी। सारे कष्ट, कहठनाइयााँ, हचन्ताएाँ और रोग िवीभूत
ाि गये। अब आप भगवान् के साथ एक िो गये।
ऐसा अनुभव करें -समस्त िगत् आपका िरीर िै, आपका अपना घर िै। सभी प्रहतरोध,
ाि मानव को मानव से पृथक् करते िैं, उन्ें िवीभूत या नष्ट कर दें। श्रेष्ठता का हवचार अज्ञान या
माया िै। "इिवास्हमदं सविम्।" हवश्व-प्रेम, सबका स्वागत करने वाला, सबको एक करने वाला
प्रेम हवकहसत करें। सबके साथ एक िो िायें। हवयोग या पृथकता िी मृत्यु िै। ऐक् हनत्य िीवन
ि। समस्त िगत् हवश्व-वृन्दावन िै। अनुभव कीहिए-आपका िरीर ईश्वर का चहलत मद्धन्दर िै। ििााँ भी आप िैं- घर, कायािलय, रेलवे स्टेिन या हसनेमा में-सोचें, आप मद्धन्दर में िैं। प्रत्येक कायि को
ईश्वर को समहपित कर दें। अनुभव करें हक समस्त प्राणी ईश्वर के प्रहतरूप िैं। प्रत्येक कायि को ईश्वर के प्रहत समहपित करके उसे योग में रूपान्तररत कर दें। यहद आप वेदान्त के हवद्याथी िैं, तो
अकताि भाव रद्धखए। यहद आप भद्धक्त मागि के अहभलाषी िैं, तो उनके िाथों ंके उपकरण की भााँहत हनहमत्त भाव रखें। अनुभव करें हक भगवान् आपके िाथों ंसे कायि करते िैं। एक िी िद्धक्त सब
ाथों ंसे कायि करती िै, सभी आाँखों ंसे देखती िै, सभी कानों ंसे सुनती िै। अब आप एक
रूपान्तररत मनुष्य िो िायेंगे। आपका दृहष्टकोण बदल िायेगा। आप परम िाद्धन्त तथा परमानन्द का
उपभोग करेंगे।

स्व-प्रकाश्य ब्रह्म आपके समस्त कायों में आपका हनदेिन करें!
आपको सुख, िाद्धन्त तथा अमरव की िुभ कामनाएाँ !!

परररडिष्ट ४

लक्ष्मीस्तोत्रम्

लक्ष्ी ंक्षीरसमुद्र राजतनयां श्रीरंगिामेश्वरी ं
दासीभूतसमस्त देव वडनतां लोकैक दीपांकुराम् ।
श्रीमन्मन्दकटाक्षलब्ध डवभव ब्रह्ेमेन्द्रगंगिारां
तां त्रैलोक्य कुटुम्बिनी ंसरडसजां वन्े दे मुकुन्दडियाम् ।।

अर्थ : क्षीरसागररा की पुत्री, हवष्णु-धाम की अहधष्ठात्री, समस्त देवांगनाएाँ हिनकी सेवा
कर री िैं (ऐसी), िगत् की केवल मात्र ज्योहत, ब्रह्मा, इि और हिव–से मिान् देवों ंका
वैभव भी मन्द कृपा-कटाक्ष से वृद्धंगित करने वाली, त्रैलोक्–ननी, कमल-द्धस्थत िरर-हप्रया
(मुकुन्द-हप्रया) लक्ष्मी का मैं वन्दन करता हाँ।

पररडिष्ट ५

पि के हलए मन्त्र

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ
ॐ श्री गणेिाय नमुः ।।
ॐ श्री िरवणभवाय नमुः ।।
ॐ नमुः हिवाय ।।
ॐ नमो नारायणाय ।।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।
ॐ श्री रामाय नमुः ।।
ॐ श्री सरस्वत्यै नमुः ।।
ॐ श्री दुगायै नमुः ।।
ॐ श्री मिालक्ष्म्यै नमुः ।।
हिवोऽहं हिवोऽहं हिवोऽहम् ।।
सोऽहं सोऽहं सोऽहम् ।।

पररडिष्ट ६

कीतिन

यिगणेि िय गणेय िय गणेि पाहिमाम्।
श्रीगणेि श्री गणेि श्री गणेि रक्ष माम्।।

रिवणभव िरवणभव िरवणभव पाहि मान् ।
काहतिके य काहतिके य काहतिके य रक्ष माम् ।।

यि गुरु हिव गुरु िरर गुरु राम।
गिद् गुरु परम गुरु सद् गुरु श्याम ।।

रि राम िरे राम राम राम िरे िरे।
रि कृ ष्ण िरे कृ ष्ण कृ ष्ण कृ ष्ण िरे िरे ।।

ॐ नमु: हिवाय, ॐ नमु: हिवाय।
ॐ नमु: हिवाय, ॐ नमु: हिवाय ।।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते रामचिाय ।।

ॐ नमो नारायणाय, ॐ नमो नारायणाय ।
ॐ नमो नारायणाय, ॐ नमो नारायणाय ।।

रघुपहत राघव रिा राम ।
पहतत पावन सीता राम ।।

ॐ श्री राम िय राम िय िय राम ।
ॐ श्री राम िय राम िय िय राम ।।

पररडिष्ट ७

ईश्वर के प्रहत कृतज्ञता प्रकट करना

उस सब पर दया करने वाले ईश्वर को धन्यवाद दें,
उसने आपको एक बलिाली स्वस्थ िरीर,
बुद्धि, सौन्दयि, मधुर वाणी,
अच्छा व्यद्धक्तत्व, सद्गुण,
सुख-सुहवधाएँ, अच्छा भोिन, वस्त्र आहद हदये िैं।
वे सदाआपकीदेखभालकरतेिैं,
वे अदृश्यरूपमेंआपकीसिायताकरतेिैं।
उनकी कृ पा और अदृश्य िाथों ं का अनुभव कीहिए।
वे आपकेहमत्र,हनदेिक,हपता,माता,गुरुिैं।
उनके प्रहत कृ तज्ञ िों,ं
उनका सदा स्मरण करें,
उनके नाम, यि और कीहति का गान करें।
उनके प्रहत समपिण करें।
उनकी पूिा करें।
उनका ध्यान करें।
सभी प्राहणयों ं में उनकी सेवा करें।
सभी प्राहणयों ं में उनका दििन करें।
िब भी आप कोई अच्छी वसुतु प्राप्त करें,
भगवान् से किें :
िे ईश्वर आप हकतने दयालु िैं!
मैं आपका हाँ, सब आपका िै, मेरे ईश्वर।
आप िी सब-कु छ करते िैं ।
मैं आपके सामने कृ तज्ञ हाँ।
आपको चरणों ं में मेरे करोड़ों ं प्रणाम !